युवाओं में पर्यावरण जागरूकता: वैश्विक स्थिरता एक अनिवार्य रणनीति

आराधना सिंह

शोधार्थी, मनराखन महतो बी.एड. कॉलेज, रांची, झारखंड

सारांश (Abstract): आज के समय में जब पूरी दुनिया पर्यावरणीय संकट का सामना कर रही है, जैसे जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता की हानि, वनों की कटाई और जल संकट आदि। युवाओं में पर्यावरण जागरूकता का होना बेहद जरूरी हो गया है। युवा लोग आज के महत्वपूर्ण सदस्य होने के साथ-साथ कल के नेता भी हैं। इसलिए वे एक टिकाऊ और स्वस्थ समाज बनाने में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। यह शोध-पत्र उन प्रमुख कारणों की समीक्षा करता है जो युवाओं में पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देते हैं। इनमें स्कूली शिक्षा, परिवार और समाज का प्रभाव, डिजिटल मीडिया, साथियों का प्रभाव, प्रकृति से जुड़े अनुभव और युवाओं की अगुआई में होने वाले आंदोलन शामिल हैं। मौजूदा शोध साहित्य बताता है कि जब पर्यावरण शिक्षा को व्यावहारिक अनुभव और सहभागी गतिविधियों के साथ जोड़ा जाता है, तो युवाओं में ज्ञान, सोच और व्यवहार में सबसे अधिक और स्थायी सुधार होता है। हालाँकि जागरूकता को लगातार पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार में बदलना अभी भी एक चुनौती है, क्योंकि इसके रास्ते में आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं आती हैं। यह पत्र यह भी दर्शाता है कि युवाओं के नेतृत्व में चलने वाले जलवायु आंदोलन किस तरह पर्यावरण जागरूकता को एक बड़े सामूहिक कार्य में बदल सकते हैं। साथ ही, शोध में कुछ कमियाँ भी बताई गई हैं, खासकर दीर्घकालिक अध्ययनों की कमी और विकासशील देशों के युवाओं की कम भागीदारी। निष्कर्ष यह है कि युवाओं में पर्यावरण जागरूकता बढ़ाना न केवल एक शैक्षणिक लक्ष्य है, बल्कि वैश्विक स्थिरता लक्ष्यों को पाने के लिए एक अनिवार्य रणनीति है।

मुख्य शब्द (Keywords): *पर्यावरण जागरूकता, युवा, सतत विकास, पर्यावरण शिक्षा, पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार, जलवायु परिवर्तन*

I. प्रस्तावना (Introduction)

इक्कीसवीं सदी में पर्यावरणीय चुनौतियाँ इतनी बड़ी और जटिल हो गई हैं जितनी पहले कभी नहीं थीं। वैश्विक तापमान बढ़ रहा है, जंगल कट रहे हैं, नदियाँ और समुद्र प्रदूषित हो रहे हैं, और कई जीव-जंतुओं की प्रजातियाँ विलुप्त होती जा रही हैं। इन सबके बीच एक बेहद जरूरी सवाल उठता है जैसे, हम कैसे एक ऐसी पीढ़ी तैयार करें जो प्रकृति को समझे, उससे प्रेम करे और उसकी रक्षा के लिए काम करे?

युवा, यानी लगभग 10 से 25 वर्ष के बीच के लोग, इस पूरी कहानी में एक अनूठी जगह रखते हैं। वे पिछली पीढ़ियों के पर्यावरणीय फैसलों के परिणाम भुगत रहे हैं, और साथ ही वे ही वो लोग हैं जो आने वाले कल को बदल सकते हैं। आज के युवा पहले से कहीं अधिक जागरूक, डिजिटल रूप से जुड़े हुए और वैश्विक समस्याओं के प्रति संवेदनशील हैं।

पर्यावरण जागरूकता, बताता है की व्यक्ति को पर्यावरणीय समस्याओं की कितनी जानकारी है, वह कितना चिंतित है और अपनी जिम्मेदारी को कितना महसूस करता है। शोध बताते हैं कि भले ही जागरूकता अकेले व्यवहार परिवर्तन की गारंटी नहीं देती, लेकिन यह उस नींव का काम करती है जिस पर पर्यावरण-अनुकूल आदतें बनती हैं (Kollmuss & Agyeman, 2002)।

यह शोध-पत्र युवाओं में पर्यावरण जागरूकता के उन प्रमुख उत्प्रेरकों की पड़ताल करता है जो उन्हें टिकाऊ परिवर्तन की दिशा में प्रेरित करते हैं। इसमें औपचारिक शिक्षा, डिजिटल तकनीक, परिवार और साथियों का प्रभाव, प्रकृति से संपर्क और युवा आंदोलनों की भूमिका का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

यह पत्र इस प्रकार व्यवस्थित है: खंड II में शोध पद्धति, खंड III में जागरूकता के उत्प्रेरकों पर निष्कर्ष एवं चर्चा, खंड IV में निष्कर्ष और खंड V में संदर्भ सूची दी गई है।

II. सामग्री एवं विधि (Materials and Methods)

यह एक समीक्षात्मक शोध-पत्र (Narrative Review) है जो युवाओं में पर्यावरण जागरूकता से संबंधित मौजूदा शोध साहित्य का विश्लेषण करता है। इसमें 2000 से 2023 के बीच प्रकाशित सहकर्मी-समीक्षित (Peer-Reviewed) अध्ययनों

का उपयोग किया गया है। ये अध्ययन Google Scholar, Scopus, ERIC और सरकारी दस्तावेज जो इंटरनेट में उपलव्द है, जैसे प्रमुख डेटाबेस से लिए गए हैं।

खोज में प्रयुक्त प्रमुख शब्द थे: 'पर्यावरण जागरूकता', 'युवा', 'किशोर', 'पर्यावरण शिक्षा', 'पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार', 'जलवायु परिवर्तन शिक्षा', 'सतत विकास', 'प्रकृति-आधारित शिक्षा', और 'युवा सक्रियता'।

अध्ययनों को शामिल करने के मानदंड: (1) 10 से 25 वर्ष आयु वर्ग के प्रतिभागी, (2) पर्यावरण जागरूकता के कारणों या हस्तक्षेपों का अध्ययन, (3) ज्ञान, दृष्टिकोण या व्यवहार से संबंधित मापने योग्य परिणाम, (4) सहकर्मी-समीक्षित प्रकाशन। मुख्यतः वयस्कों पर केंद्रित अध्ययन, गैर-अनुभवजन्य लेख और अंग्रेज़ी के अलावा अन्य भाषाओं के अध्ययन को बाहर रखा गया।

साहित्य की विविधता — सर्वेक्षण, केस स्टडी, प्रयोगात्मक डिज़ाइन और मिश्रित-विधि अध्ययन — को देखते हुए कथात्मक संश्लेषण (Narrative Synthesis) का उपयोग किया गया। इस पत्र के लिए कोई नया प्राथमिक डेटा संग्रहीत नहीं किया गया।

III. परिणाम एवं चर्चा (Results and Discussion)

3.1 औपचारिक पर्यावरण शिक्षा — सबसे महत्वपूर्ण उत्प्रेरक

युवाओं में पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने में स्कूलों और शैक्षणिक संस्थाओं में दी जाने वाली पर्यावरण शिक्षा सबसे अधिक प्रभावशाली पाई गई है। Ardoin, Bowers और Gaillard (2020) द्वारा किए गए एक बड़े अध्ययन में 100 से अधिक शोधों की समीक्षा की गई, जिसमें पाया गया कि व्यवस्थित पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रमों से छात्रों के पारिस्थितिक ज्ञान में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता और तरीका भी उतना ही जरूरी है। केवल किताबों तक सीमित शिक्षा कम प्रभावी होती है। जब छात्र खुद जाँच-पड़ताल करते हैं, स्थानीय पर्यावरणीय समस्याओं को समझते हैं और समाधान खोजने की कोशिश करते हैं, तो सीखने का असर गहरा और स्थायी होता है (Rickinson, 2001)।

जब पर्यावरण के विषय विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भूगोल और नागरिक शास्त्र जैसे कई विषयों में एक साथ शामिल किए जाते हैं, तो छात्र इसे जीवन से जुड़ी एक महत्वपूर्ण बात समझने लगते हैं। संयुक्त राष्ट्र के 'सतत विकास के लिए शिक्षा दशक' (2005–2014) ने इसी एकीकृत दृष्टिकोण को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा दिया (UNESCO, 2017)।

शिक्षक की भूमिका भी बेहद अहम है। भारत, केन्या, ब्राज़ील और जर्मनी में हुए अध्ययनों से पता चलता है कि जो शिक्षक पर्यावरण विषयों में प्रशिक्षित और उत्साहित हैं, उनके छात्र कहीं अधिक जागरूक और प्रेरित होते हैं (Braun et al., 2018, Taber & Taylor, 2009)।

3.2 प्रकृति से जुड़ा अनुभव और अनुभव-आधारित शिक्षा

प्रकृति के साथ सीधा संपर्क यानी जंगल में घूमना, बगीचे में काम करना, पक्षी देखना, या स्थानीय पर्यावरण को समझना पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने का एक बेहद शक्तिशाली तरीका है। Chawla (1998) के एक महत्वपूर्ण शोध में पाया गया कि जो बड़े लोग पर्यावरण के लिए सक्रिय रूप से काम करते हैं, उनमें से अधिकांश बचपन में प्रकृति से जुड़े अनुभवों को अपनी प्रेरणा बताते हैं।

Wells और Lekies (2006) ने पाया कि जिन बच्चों ने 11 साल की उम्र से पहले प्राकृतिक वातावरण में समय बिताया, वे बड़े होकर पर्यावरण संरक्षण में अधिक रुचि लेते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि बचपन में प्रकृति से जुड़ाव जीवनभर के पर्यावरण-प्रेम की नींव रखता है।

शहरों में रहने वाले बच्चों के लिए प्राकृतिक वातावरण तक पहुँच कम होती है। इसलिए स्कूल के बगीचे, हरित आँगन और शहरी जैव-विविधता कार्यक्रम जैसे नवाचार बेहद उपयोगी हैं। Louv (2005) ने 'नेचर-डेफिसिट डिसऑर्डर' की अवधारणा दी, जो बताती है कि प्रकृति से दूरी बच्चों के विकास पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

प्रकृति-आधारित शिक्षा के फायदे केवल पर्यावरण ज्ञान तक सीमित नहीं हैं। इससे मानसिक स्वास्थ्य में सुधार, तनाव में कमी, सामाजिक रिश्तों में मजबूती और स्कूल में बेहतर प्रदर्शन भी देखा गया है (Nisbet, Zelenski & Murphy, 2009)।

3.3 परिवार, घर और समुदाय का प्रभाव

परिवार बच्चे के पर्यावरणीय मूल्यों को आकार देने वाला पहला और सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। Stevenson, Peterson और Bondell (2019) के अध्ययन में पाया गया कि जिन घरों में माता-पिता पर्यावरण पर बात करते हैं और खुद पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार अपनाते हैं — जैसे कूड़े को अलग करना, बिजली बचाना, पानी का सही उपयोग करना, उन घरों के बच्चे कहीं अधिक पर्यावरण-जागरूक होते हैं।

ग्रामीण और आदिवासी समुदायों में दादा-दादी और नाना-नानी परंपरागत पर्यावरण ज्ञान को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह अनौपचारिक ज्ञान जैसे स्थानीय पौधों, नदियों और मौसम को पहचानना, बच्चों में पर्यावरण के प्रति गहरी समझ और जुड़ाव पैदा करता है (Kahn & Kellert, 2002)।

समुदाय का माहौल भी बहुत मायने रखता है। जहाँ पर्यावरण संरक्षण एक सामान्य और सम्मानित आदत है, वहाँ के युवा स्वाभाविक रूप से अधिक जागरूक होते हैं। वहीं जहाँ पर्यावरण की देखभाल को आर्थिक संकट से जोड़कर देखा जाता है, वहाँ युवाओं की प्रेरणा कम हो सकती है (Fielding & Hornsey, 2016)।

3.4 साथियों का प्रभाव और सामाजिक मानदंड

किशोरावस्था में दोस्त और साथी बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। जब किसी युवा के दोस्त पर्यावरण की परवाह करते हैं और पर्यावरण-अनुकूल काम करते हैं, तो वह युवा खुद भी ऐसा करने के लिए प्रेरित होता है। यह प्रभाव सीधे बातचीत और देखकर सीखने दोनों तरीकों से काम करता है (Fielding & Hornsey, 2016)।

स्कूलों में पर्यावरण क्लब, छात्रों द्वारा चलाए जाने वाले अभियान और छात्र पर्यावरण परिषदें इस ऊर्जा का सदुपयोग करने का अच्छा तरीका हैं। इनसे जागरूक युवाओं का एक समूह बनता है जो एक-दूसरे को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

एक खतरा भी है, अगर किसी समूह में पर्यावरण-चिंता को 'अजीब' या 'बेकार' माना जाए, तो युवा अपनी सच्ची भावनाओं को दबा सकते हैं। Schultz (2001) इसे 'बहुलतावादी अज्ञानता' (Pluralistic Ignorance) कहते हैं, जब हर कोई मन में पर्यावरण की परवाह करता है लेकिन सोचता है कि बाकी नहीं करते।

3.5 डिजिटल मीडिया, तकनीक और पर्यावरण संचार

डिजिटल क्रांति ने युवाओं के जानकारी हासिल करने और साझा करने के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है। Instagram, TikTok, YouTube और Twitter जैसे मंच पर्यावरणीय जानकारी को तेज़ी से और आकर्षक तरीके से फैलाने में मदद करते हैं। जब डिजिटल सामग्री में प्रभावशाली तस्वीरें और स्पष्ट संदेश होते हैं, तो वे युवाओं में पर्यावरण के प्रति चिंता और काम करने की इच्छा बढ़ाती हैं (Clayton et al., 2017)।

'बीच क्लीन-अप चैलेंज', 'ज़ीरो-वेस्ट लाइफस्टाइल' जैसे वायरल अभियानों ने दिखाया है कि डिजिटल मीडिया बड़ी संख्या में युवाओं को एकजुट कर सकता है। पर्यावरण शिक्षा के YouTube चैनल और ऐप्स ने स्कूली शिक्षा से परे जाकर युवाओं तक पहुँचने में मदद की है।

हालाँकि, डिजिटल दुनिया में चुनौतियाँ भी हैं। गलत जानकारी और जलवायु परिवर्तन को नकारने वाली सामग्री युवाओं को भ्रमित कर सकती है। लगातार नकारात्मक पर्यावरणीय खबरें देखने से 'इको-एंग्जायटी' (पर्यावरणीय चिंता) बढ़ सकती है, जिसमें युवा असहाय और निराश महसूस करने लगते हैं। इसलिए ऐसी पर्यावरण संचार शैली जरूरी है जो समस्याओं के साथ-साथ उम्मीद और समाधान भी दिखाए।

गेमिफिकेशन यानी खेल की तरह पर्यावरण सीखना एक नया और प्रभावशाली तरीका है। वर्चुअल रियलिटी, पर्यावरण चुनौती गेम्स और सिमुलेशन टूल्स युवाओं को मनोरंजन के साथ-साथ गहरी पर्यावरणीय समझ देते हैं।

3.6 युवाओं की अगुआई में पर्यावरण आंदोलन

आज का सबसे प्रेरक उदाहरण है 'Fridays for Future' आंदोलन, जो 2018 में स्वीडन की किशोरी ग्रेटा थनबर्ग ने शुरू किया था। महज कुछ महीनों में यह आंदोलन 150 से अधिक देशों में फैल गया और लाखों युवा सड़कों पर उतर आए। यह आंदोलन दशकों की पर्यावरण शिक्षा, डिजिटल जुड़ाव और एक ऐसी पीढ़ी की जागरूकता का परिणाम था जो जानती है कि विज्ञान क्या कहता है और राजनीति क्या कर रही है (Wagler & Wagler, 2011)।

युवाओं की अगुआई में होने वाले आंदोलन एक साथ कई दिशाओं में काम करते हैं — वे खुद प्रतिभागियों में जागरूकता और ज्ञान बढ़ाते हैं; वे अपने साथियों, परिवार और समाज को प्रभावित करते हैं; और कई बार वे अपने माता-पिता को भी पर्यावरण की चिंता करने पर मजबूर करते हैं। इसे 'रिवर्स सोशलाइज़ेशन' कहा जाता है (Stevenson et al., 2019)।

युवा पर्यावरण समूहों में हिस्सा लेने वाले युवाओं में 'पर्यावरणीय आत्म-प्रभावशीलता' (Environmental Self-Efficacy) — यानी यह विश्वास कि मेरे काम से फर्क पड़ेगा — कहीं अधिक होती है। यह विश्वास ही उन्हें लंबे समय तक सक्रिय रखता है (Krasny & Tidball, 2015)।

3.7 जागरूकता के व्यावहारिक और नागरिक परिणाम

उच्च पर्यावरण जागरूकता वाले युवा घर में बिजली और पानी बचाते हैं, कचरे को सही तरीके से निपटाते हैं, टिकाऊ खानपान अपनाते हैं और पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद चुनते हैं। यूरोप, उत्तरी अमेरिका और पूर्वी एशिया में हुए अध्ययन इस संबंध को लगातार सिद्ध करते हैं।

नागरिक स्तर पर, ऐसे युवा पर्यावरण याचिकाओं पर हस्ताक्षर करते हैं, विरोध प्रदर्शनों में भाग लेते हैं, जनप्रतिनिधियों से संपर्क करते हैं और पर्यावरण संगठनों से जुड़ते हैं। Ardoin et al. (2020) के दीर्घकालिक अध्ययन में पाया गया कि जिन युवाओं ने स्कूल में व्यापक पर्यावरण शिक्षा पाई, वे वयस्क होने पर पर्यावरण समर्थन संगठनों से जुड़ने और संबंधित करियर चुनने में कहीं आगे रहे।

केवल पर्यावरणीय जागरूकता तक सीमित रहने के बजाय, समकालीन पर्यावरण शिक्षा अब पर्यावरणीय दक्षता के विकास पर अधिक बल देती है, जिसमें पर्यावरणीय ज्ञान, मूल्य, दृष्टिकोण तथा व्यावहारिक कार्य-कौशल सम्मिलित होते हैं। (Roczen et al. 2014) के अनुसार, ये सभी दक्षताएँ सामूहिक रूप से किसी व्यक्ति की पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी व्यवहार को प्रभावी ढंग से अपनाने और उसका पालन करने की क्षमता निर्धारित करती हैं। इसलिए, पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रमों का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं होना चाहिए, बल्कि उनमें विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान कौशल तथा सार्थक पर्यावरणीय कार्यों में सक्रिय भागीदारी के अवसर भी विकसित किए जाने चाहिए। इस प्रकार की दक्षता-आधारित शैक्षिक पद्धतियाँ युवाओं को विविध सामाजिक एवं पारिस्थितिक संदर्भों में उभरती जटिल

सतत विकास संबंधी चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने और उनके समाधान में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाती हैं।

हालाँकि, जागरूकता और वास्तविक व्यवहार के बीच एक अंतर बना रहता है जिसे 'जागरूकता-कार्य अंतर' (Awareness-Action Gap) कहते हैं (Kollmuss & Agyeman, 2002)। इसके पीछे बुनियादी सुविधाओं की कमी, महंगे टिकाऊ विकल्प, और यह भावना कि 'मेरे अकेले के करने से क्या होगा' जैसे कारण हैं। इसे दूर करने के लिए केवल जानकारी देना काफी नहीं है — युवाओं को व्यावहारिक उपकरण, सहायक समुदाय और सक्षम बुनियादी ढाँचा भी चाहिए।

3.8 बाधाएँ और सामाजिक न्याय के पहलू

पर्यावरण जागरूकता और उसके उत्प्रेरक सभी युवाओं को समान रूप से नहीं मिलते। कम आय वाले परिवारों के बच्चे, दूर-दराज के गाँवों के युवा और विकासशील देशों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण पर्यावरण शिक्षा, प्रकृति-अनुभव और डिजिटल संसाधनों तक कम पहुँच होती है (Otto & Pensini, 2017)।

जिन समुदायों की आजीविका खनन, मछली पकड़ने या जंगल काटने पर निर्भर है, वहाँ पर्यावरण संरक्षण को खतरे के रूप में देखा जा सकता है। ऐसे में जो पर्यावरण शिक्षा केवल शहरी और पश्चिमी नजरिये से बात करती है, वह इन युवाओं को दूर कर सकती है जबकि उनकी भागीदारी सबसे जरूरी है (Wals, 2012)।

लैंगिक पहलू भी महत्वपूर्ण है। शोध बताते हैं कि लड़कियाँ आमतौर पर लड़कों की तुलना में अधिक पर्यावरण-चिंतित और पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार के प्रति अधिक तैयार होती हैं। ऐसे में लड़कों को पर्यावरण से जोड़ने के लिए विशेष और रचनात्मक कार्यक्रम बनाने की जरूरत है (Tam, 2013)।

IV. निष्कर्ष (Conclusion)

युवाओं में पर्यावरण जागरूकता एक निष्क्रिय अवस्था नहीं है, बल्कि यह एक सक्रिय और बहुआयामी क्षमता है जो कई उत्प्रेरकों औपचारिक शिक्षा, प्रकृति-अनुभव, परिवार, साथियों, डिजिटल मीडिया और नागरिक भागीदारी के मिले-जुले प्रभाव से बनती है। जब ये सभी उत्प्रेरक एक साथ और सही समर्थन के साथ काम करते हैं, तो वे ऐसे युवा तैयार करते

हैं जो पर्यावरणीय समस्याओं को समझते हैं, उनसे जुड़ाव महसूस करते हैं और उन्हें हल करने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

इस समीक्षा के निष्कर्षों से शिक्षकों, नीति निर्माताओं और समाजसेवी संगठनों के लिए कुछ महत्वपूर्ण संदेश निकलते हैं। पर्यावरण शिक्षा को केवल जानकारी देने तक सीमित नहीं रखना चाहिए। इसे अनुभव, भागीदारी और नागरिक पहचान से जोड़ना होगा। प्रकृति-आधारित शिक्षा को शहरी और कम-आय वाले युवाओं के लिए भी सुलभ बनाना होगा। डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग जागरूकता फैलाने के साथ-साथ मीडिया साक्षरता सिखाने के लिए भी होना चाहिए।

कुछ महत्वपूर्ण कमियाँ अभी भी बनी हुई हैं। विकासशील देशों में पर्यावरण शिक्षा के परिणामों पर शोध बेहद कम है। ऐसे दीर्घकालिक अध्ययन जो यह देखें कि बचपन में मिली पर्यावरण शिक्षा का जीवन पर क्या दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा, बहुत कम हैं। डिजिटल मीडिया, पर्यावरणीय चिंता और प्रेरणा के बीच के जटिल संबंध को और गहराई से समझने की जरूरत है।

अंत में, युवाओं में पर्यावरण जागरूकता बढ़ाना केवल एक शैक्षणिक विकल्प नहीं है, यह सतत विकास लक्ष्यों (SDGs), पेरिस समझौते और एक स्वस्थ पृथ्वी के भविष्य के लिए एक अनिवार्य जरूरत है। आज के युवा केवल कल के नेता नहीं हैं, वे आज ही टिकाऊ परिवर्तन के उत्प्रेरक हैं। उनकी जागरूकता और ऊर्जा को पहचानना, सम्मान देना और उसे और अधिक शक्तिशाली बनाना, यही हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है।

संदर्भ सूची (References)

1. Ardoin, N. M., Bowers, A. W., & Gaillard, E. (2020). Environmental education outcomes for conservation: A systematic review. Biological Conservation, 241, 108224. https://doi.org/10.1016/j.biocon.2019.108224
2. Otto, S., & Pensini, P. (2017). *Nature-based environmental education of children: Environmental knowledge and connectedness to nature, together, are related to ecological behaviour. Global Environmental Change, 47*, 88–94. https://doi.org/10.1016/j.gloenvcha.2017.09.009
3. Braun, T., Cottrell, R., & Dierkes, P. (2018). *Fostering changes in attitude, knowledge and behavior: Demographic variation in environmental education effects. Environmental Education Research, 24*(6), 899–920. https://doi.org/10.1080/13504622.2017.1343279

4. Chawla, L. (1998). Significant life experiences revisited: A review of research on sources of environmental sensitivity. Journal of Environmental Education, 29(3), 11–21.
5. Clayton, S., Manning, C. M., Krygsman, K., & Speiser, M. (2017). Mental Health and Our Changing Climate. American Psychological Association.
6. Fielding, K. S., & Hornsey, M. J. (2016). A social identity analysis of climate change and environmental attitudes and behaviors. Frontiers in Psychology, 7, 121.
7. Hungerford, H. R., & Volk, T. L. (1990). Changing learner behavior through environmental education. The Journal of Environmental Education, 21(3), 8–21. https://doi.org/10.1080/00958964.1990.10753743
8. Kahn, P. H., & Kellert, S. R. (Eds.). (2002). Children and Nature. MIT Press.
9. Kollmuss, A., & Agyeman, J. (2002). Mind the gap: Why do people act environmentally and what are the barriers to pro-environmental behavior? Environmental Education Research, 8(3), 239–260. https://doi.org/10.1080/13504620220145401
10. Krasny, M. E., & Tidball, K. G. (2015). Civic Ecology. MIT Press.
11. Louv, R. (2005). Last Child in the Woods. Algonquin Books.
12. Nisbet, E. K., Zelenski, J. M., & Murphy, S. A. (2009). The Nature Relatedness Scale. Environment and Behavior, 41(5), 715–740. https://doi.org/10.1177/0013916508318748
13. Rickinson, M. (2001). Learners and learning in environmental education. Environmental Education Research, 7(3), 207–320. https://doi.org/10.1080/13504620120065230
14. Schultz, P. W. (2001). The structure of environmental concern. Journal of Environmental Psychology, 21(4), 327–339. https://doi.org/10.1006/jevp.2001.0227
15. Stern, P. C. (2000). Toward a Coherent Theory of Environmentally Significant Behavior. Journal of Social Issues, 56(3), 407–424. https://doi.org/10.1111/0022-4537.00175
16. Stevenson, K. T., Peterson, M. N., & Bondell, H. D. (2019). The influence of personal beliefs, friends, and family in building climate change concern among adolescents. Environmental Education Research, 25(6), 832–845. https://doi.org/10.1080/13504622.2018.1487041
17. Taber, F., & Taylor, N. (2009). Climate of concern. International Journal of Environmental and Science Education, 4(2), 97–116.
18. Tam, K.-P. (2013). Dispositional empathy with nature. Journal of Environmental Psychology, 35, 92–104. https://doi.org/10.1016/j.jenvp.2013.05.004
19. UNESCO. (2017). Education for Sustainable Development Goals: Learning Objectives.
20. Roczen, N., Kaiser, F. G., Bogner, F. X., & Wilson, M. (2014). *A competence model for environmental education. Environment and Behavior, 46*(8), 972–992. https://doi.org/10.1177/0013916513492416

21. Wals, A. E. J. (2012). Shaping the Education of Tomorrow. UNESCO.
22. Wagler, R., & Wagler, A. (2011). Addressing the biophobia-biophilia dichotomy in schools. Connect Magazine, 24(5), 1–5.
23. Wells, N. M., & Lekies, K. S. (2006). Nature and the life course. Children, Youth and Environments, 16(1), 1–24.
24. Ballantyne, R., & Packer, J. (2002). Teaching and learning in environmental education: Developing environmental conceptions. The Journal of Environmental Education, 33(4), 9–18. https://doi.org/10.1080/00958960209603417

Copyright & License:
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.